आवधिक लिखित परीक्षा

मध्यावधि से पूर्व (Pre-Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक (स्पर्श भाग-2 गद्य खण्ड-1, 2, 3, काव्य खण्ड-1, 2, 3, संचयन-1) एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट–1

अधिकतम अंक 10

खण्ड–`क' (अपठित बोध)

1. **(i)** सबसे बेहतर सलाह देने का तरीका 'गल्प' है क्योंकि इससे कम झटका लगता लगता है।

(ii) वह उसे उस व्यक्ति की अपने प्रति पूर्वधारणा या उसकी धृष्टता मान बैठता है उसे लगता है कि वह उसे हीन समझ रहा है। उसके उत्साह को वह हीन साबित करने का बहाना मान बैठता है।

(iii) किसी की सलाह स्वीकार करने में हम सर्वाधिक अनिच्छा दिखाते हैं। ऐसा करके हम स्वयं के प्रति हीन भाव से बचने के कारण व सलाह देने वाले की बात अच्छी नहीं लगने के कारण होते हैं।

(iv) धृष्टता – धृष्ट (मूलशब्द) + ता (प्रत्यय)

खण्ड–`ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. **(i)** पद–शब्द जब व्याकरणिक नियमों में बँधकर वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। तब पद कहलाते हैं। ये स्वतंत्र नहीं होते हैं। इनके कोशीय अर्थ नहीं होते। जैसे–लड़की पुस्तक पढ़ रही है। इस वाक्य में, 'लड़की' शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने पर संज्ञा पद बन जाता है।

(ii) प्रयोग के लिए शाला–तत्पुरुष समास।

(iii) प्रमोद को समझाने से कोई लाभ नहीं, वह तो चिकना घड़ा है।

(iv) कृपया स्वीकृति दें।/स्वीकृति देने की कृपा करें।

खण्ड–`ग' (पाठ्य-पुस्तक)

3. **(i)** तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का यह मत था कि, "वह तलवार लकड़ी की होने पर भी उस तलवार में अद्‌भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी नहीं करता। उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्‌भुत शक्ति का होना मानते थे। तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।"

(ii) पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को इसलिए घेर लिया था कि भारतीय जनता स्वतंत्रता का उत्सव न मना सके और झंडा फहराकर सभा न कर सके।

(iii) बड़े भाई साहब पर छोटे भाई की निगरानी का दायित्व था। वे अध्ययनशील थे, समय के पाबन्द थे, अहंकार रहित, अनुभवी और समझदार थे। छोटे भाई के हित के लिए उन्हें अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं, क्योंकि यदि वे स्वयं गलत राह पर चलेंगे तो अपने छोटे भाई की रक्षा एवं देख-रेख कैसे कर सकेंगे, अपने छोटे भाई के भविष्य की चिन्ता एवं कर्तव्य के कारण उन्हें अपने मन की सारी इच्छाओं को दबाना पड़ता था।

4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा उत्पन्न इसलिए हुई, क्योंकि उन्होंने अधिकारपूर्वक समझाते हुए कहा था, "तुम अपने मन से यह अहंकार निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे होते हुए तुम बेराह नहीं चलने पाओगे, अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें अधिकारपूर्वक थप्पड़ मारकर सुधारने का प्रयास करूँगा। तुम्हें मेरी ये बातें जहर लग रही होंगी, है न.....।" इन बातों को सुनकर छोटे भाई के मन में अपनी लघुता का अनुभव हुआ और मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई।

5. **(i)** ईश्वर कण-कण में व्याप्त है पर हम उसे उसी प्रकार नहीं देख पाते हैं, जिस प्रकार कस्तूरी मृग अपनी नाभि में स्थित कस्तूरी को ढूँढ नहीं पाता और वह उसे (कस्तूरी को) वन-वन (जंगल-जंगल) खोजता फिरता है।

(ii) मीराबाई श्याम (श्रीकृष्ण) की चाकरी इसलिए करना चाहती हैं, क्योंकि उनकी चाकरी करने पर मीरा को नित्य दर्शन का लाभ मिलेगा, वृंदावन की कुंज गली में गोविन्द की लीलाओं को गा सकेंगी और उन्हें भक्ति भाव का साम्राज्य प्राप्त हो जाएगा।

(iii) कवि पंत के अनुसार प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलती है। पर्वत मंडलाकार व बहुत विशाल है। उस पर फूल रूपी हजारों आँखें अपनी परछाईं को तालाब में देख रही हैं। पर्वत की विशालता इस बात से पता चलती है कि उसे निहारने के लिए केवल दो जोड़ी आँखें नहीं हैं बल्कि हजारों आँखें हैं।

6. हरिहर काका के साथ उनके भाइयों द्वारा दुर्व्यवहार करने पर महंत ने उनकी जायदाद के लालच में काका की बहुत आव-भगत की। उन्हें अपने साथ ठाकुरबाड़ी ले आया और उन्हें तरह-तरह से बहला-फुसलाकर जायदाद को ठाकुर जी के नाम करने के लिए समझाने लगा व किसी भी तरह से उनकी जायदाद को अपने नाम लिखवाना चाहता था किन्तु हरिहर काका ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया तो उन्हें अपने पुजारियों से पिटवाया और कोरे कागजों पर उनके अँगूठे के निशान ले लिए यहाँ तक कि उन्हें जान से मरवाने का भी प्रयास किया।

खण्ड-'घ' (लेखन)

7.

आवश्यक सूचना

दिनांक 1 अगस्त, 2017

कक्षा 9 व 10 के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि शनिवार दिनांक 5 अगस्त 2017 को पुस्तकालय में 'बाल-सभा' का आयोजन विद्यालय समयानुसार अंतिम दो कालांशों में होगा। इस 'बाल सभा' में कक्षा 9 व 10 के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जायेगा, जिसका विषय है—हमारे भविष्य को निर्धारित करना हमारे अभिभावकों के हाथ में है?

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक छात्रों के नाम आमंत्रित हैं।

छात्रों से अनुरोध है कि वे अपना नाम गुरूवार तक हिन्दी साहित्य सोसायटी के सचिव को दे दें।

सुष्मिता सिंह
गतिविधि अधिकारी
हिन्दी साहित्य सोसायटी

●●

टेस्ट–2

अधिकतम अंक 10

खण्ड-'क' (अपठित बोध)

1. (i) 'पीछे छूट गया बचपन' का आशय यह है कि अब हम बड़े हो गए और बचपन की स्मृतियाँ मात्र शेष रह गईं।

(ii) वर्तमान को दोपहरी इसलिए कहा है क्योंकि वर्तमान जीवन कष्टपूर्ण व श्रमपूर्ण है। आज बरगद की छाँव की तरह बचपन याद आता है।

(iii) काव्यांश का केंद्रीय भाव यह है कि बड़ा होने पर संघर्षपूर्ण जीवन बचपन के सुहाने पलों की याद दिलाता है। बचपन के खेल और दिनचर्या वर्तमान की दोपहरी में बरगद की छाँव का एहसास दिलाती है।

खण्ड-'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. (i) वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है, परन्तु वाक्य में प्रयुक्त होकर शब्द पद बन जाता है।

(ii) शताब्दी—द्विगु समास

(iii) जैसे ही पुलिस दिखी, वैसे ही जुलूस टूट गया।

(iv) सर्जिकल स्ट्राइक पर नेताओं द्वारा राजनीति करने से सैनिकों का कलेजा छलनी हो गया।

खण्ड-'ग' (पाठ्य-पुस्तक)

3. (i) बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ जिंदगी के अनुभवों (तजुर्बे) से आती है। समझ किताब पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। जो व्यक्ति उम्र में अधिक है कम पढ़ा-लिखा है परन्तु वह जीवन के लम्बे अनुभवों के आधार पर जीवन की समझ रखता है, वह कम उम्र के पढ़े-लिखे व्यक्तियों से ज्यादा श्रेष्ठ है और परिस्थितियों का सामना करने की समझ रखता है।

(ii) वमीरो ने तताँरा को बेरुखी से यह जवाब दिया "पहले बताओ। तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।"

4. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में बताया गया है कि जब पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तब पर्वतों से प्रवाहित होने वाले झरने पर्वतों का गौरवगान करते हुए पृथ्वी पर झर-झर गिरते हैं और नस-नस में उत्तेजना भर देते हैं। झरते हुए झरने झाग भरे हुए होते हैं। वे मोती की माला जैसे लड़ियों की तरह सुन्दर दिखाई देते हैं और ऐसा लगता है कि पहाड़ों से चाँदी का भण्डार सफेद धातु के रूप में गिर रहा है। पहाड़ों के हृदय से उठकर ऊँची आकांक्षाओं वाले वृक्ष आकाश की ओर शान्त भाव से टकटकी लगाकर देख रहे हैं। इस प्रकार

झरने पहाड़ों की शोभा को बढ़ाते हैं।

अथवा

मीरा भगवान कृष्ण की भक्त थीं। वे कृष्ण को अपना प्रियतम, पति और रक्षक मानती थीं। इन पदों में उन्होंने उनके दो रूपों-रक्षक रूप तथा रसिक रूप की आराधना करते हुए प्रभु से अपनी रक्षा करने की गुहार की है। वे स्वयं को उनकी दासी बताते हुए कहती हैं– 'दासी मीरा लाल गिरधर, हरो म्हारी पीर'।

वे स्वयं को कृष्ण का अपनाजन ही कहती हैं तथा उनकी चाकरी करने को तैयार हैं। वे उनके महल में रहकर उनके विहार के लिए बाग लगाने को भी तैयार हैं। वे वृन्दावन की गली-गली में घूमकर कृष्ण का गुणगान करना चाहती हैं।

दूसरे पद में वे कृष्ण के सुंदर छबीले रूप की आराधना करती हैं और उनके मुरलीधर रूप का स्मरण करती हैं। वे स्वयं लाल साड़ी पहनकर उनसे मिलना चाहती हैं और यमुना तट की याद कराकर प्रेम के बंधन में बाँध लेना चाहती हैं।

5. समाज में रिश्तों की यह अहमियत है कि आधुनिक परिवर्तित समाज तथा रिश्तों में बदलाव आ रहा है। परिवार और रिश्ते दोनों ही अपनी भूमिका छोड़ रहे हैं। उनमें स्वार्थ लोलुपता आती जा रही है। कथावस्तु के आधार पर हरिहर काका एक वृद्ध नि:संतान व्यक्ति हैं, वैसे उनका भरा-पूरा संयुक्त परिवार है परन्तु परिवार को हरिहर काका की चिन्ता नहीं है। परिवार के सदस्यों को जब लगता है काका कहीं अपनी जमीन महंत के नाम न कर दें तब वे उनकी सेवा करने लगते हैं परन्तु बाद में अपनी स्वार्थ सिद्धि पूर्ण न होती देखकर वे काका के साथ क्रूरतापूर्ण अमानवीय व्यवहार करते हैं। परन्तु महन्त के सहयोग से पुलिस वहाँ आकर काका की रक्षा करती है। पारिवारिक सम्बन्धों में भ्रातृभाव को बेदखल कर पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लिप्सा, हिंसावृत्ति का रूप ले रही है जिससे समाज में रिश्तों में दूरियाँ और विघटन उत्पन्न हो रहा है।

खण्ड–'घ' (लेखन)

6.

चाट वाला	:	और भाई रामलाल! कैसे हो, धंधा कैसा चल रहा है ?
मूँगफली वाला	:	भैया, बहुत बुरा हाल है, ग्राहक दूर-दूर तक नहीं है ?
चाट वाला	:	यही हाल मेरा भी है, एक जमाना था जब मेरे ठेले पर भीड़ भरी रहती थी और एक आज का दिन है कि मक्खियाँ ही मारता रहता हूँ।
मूँगफली वाला	:	हाँ भइया, अब तो लोग चिप्स, कुरकुरे खाते हैं, कोई मूँगफली कहाँ खाता है जबकि मूँगफली तो पौष्टिक भी बहुत होती है।
चाट वाला	:	यही हाल मेरे साथ है पिज्जा, बर्गर खाने वाले बच्चे अब गोलगप्पे कहाँ खाते हैं?
मूँगफली वाला	:	पर फिर भी भाई जो मजा देशी खाने की चीजों में है ये विदेशी चीजों में कहाँ ?
चाट वाला	:	सही कह रहे हो भई! वो देखो, शायद कुछ ग्राहक आ रहे हैं।

●●

मध्यावधि (Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक (स्पर्श भाग-2, गद्य खण्ड-1, 2, 3, 4, 5, 6 काव्य खण्ड-1,2,3,4,5,6, संचयन-1,2) एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट–1

अधिकतम अंक 10

खण्ड–'क' (अपठित बोध)

1. **(i)** प्रस्तुत गद्यांश में नैतिक शिक्षा की बात की जा रही है। उसके दो रूप हैं—सकारात्मक व नकारात्मक।

(ii) सत्य, अहिंसा, परोपकार और करुणा ही परहित गुण होते हैं। तुलसीदास ने इन्हें परम धर्म कहा है।

(iii) तुलसीदास ने काम, क्रोध, मोह, लोभ, दुर्वचन आदि अवगुणों को पाप कहा है।

(iv) छात्रों को यदि नैतिक शिक्षा दी जाएगी तो वे कुमार्ग त्याग कर सन्मार्ग पर चलेंगे।

खण्ड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. **(i)** वे शब्द जो प्रयोग के अनुसार परिवर्तित नहीं होते, अविकारी या अव्यय कहलाते हैं। इनके भी मुख्य रूप से चार भेद होते हैं—(1) क्रिया विशेषण, (2) सम्बन्ध बोधक, (3) समुच्चय बोधक, (4) विस्मयादि बोधक।

(ii) चार राहों का समाहार—द्विगु,

(iii) मिश्रित वाक्य।

(iv) मुसीबत आते ही परिवार के लोगों ने मुझसे आँखें फेर लीं।

खण्ड–'ग' (पाठ्य-पुस्तक)

3. **(i)** प्रकृति में आए असंतुलन का परिणाम यह हुआ कि अब गरमी में ज्यादा गरमी, पड़ने लगी, बेवक्त की बरसातें होने लगी, जलजले, सैलाब और तूफान उठने लगे हैं। साथ ही नित नए-नए रोग उत्पन्न होने लगे हैं।

(ii) सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का इसलिए रह गया, क्योंकि उसे वज़ीर अली की हिम्मत और बहादुरी ने अचंभित कर दिया। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था, वह सवार के रूप में वज़ीर अली उसके खेमे (शिविर) में आकर कारतूस लेकर उसकी जान बख्श कर चला गया और वह कुछ भी नहीं कर सका।

4. **(i)** बुजुर्ग हमारी विरासत, हमारी धरोहर होते हैं। उनके अनुभवों से ज्ञान प्राप्त होता है, हमें नई-नई बातें सिखाते हैं। हमारे नैतिक तथा चारित्रिक बल को ऊँचा उठाने की कोशिश करते हैं। जब टोपी इफ़्फ़न के घर जाता तो कई बार उसकी अम्मी और बाजी उसकी भाषा का मज़ाक उड़ाती, तब इफ़्फ़न की दादी ही बीच-बचाव करती थीं। उसे दादी से बहुत अपनापन मिलता था। हमारे घर में रह रहे बुजुर्गों की हम देखभाल करेंगे तथा उनकी सेवा करेंगे। हर तरह से उनका ध्यान रखेंगे।

(ii) ग्रीष्म ऋतु की भंयकर गर्मी है। चारों ओर गर्मी और लू की धू-धू मची है। जंगल के सभी जानवर गर्मी से इतने बेहाल हैं कि वे भूख-प्यास भूले बैठे हैं। उनका शत्रु-भाव समाप्त हो गया है। वे मित्र-भाव से इकट्ठे गर्मी झेल रहे हैं। हिरन-शेर, साँप-मोर एक साथ झुलस रहे हैं। जंगल मानो तपोवन हो गया है।

जेठ मास की गर्मी में सूरज सिर पर आ गया है। छायाएँ दुबक कर गायब हो गई हैं। लगता है कि छाया भी घने जंगल में दुबक कर आराम कर रही है। उसे भी छाँव की जरूरत महसूस होने लगी है।

5. ओमा छात्र नेता था। उसका शरीर विचित्र साँचे में ढला हुआ था। वह ठिगना और हट्टा-कट्टा बालक था, परन्तु उसका सिर बहुत बड़ा था। उसे देखकर यूँ लगता था मानो किसी बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा है। उसकी आँखें नारियल जैसी और चेहरा बंदरिया जैसा था। उसका सिर इतना भयंकर था कि वह लड़ाई में सिर की भयंकर चोट करता था। उसकी चोट से लड़ने वाले की पसलियाँ टूट जाती थीं। बच्चे उसके सिर के वार को रेल-बंबा कहते थे। वह स्वभाव से लड़ाका तथा मुँहफट था।

खण्ड–'घ' (लेखन)

6.

प्रेषक :
सुकान्त मेहता
B686/5 लक्ष्मी नगर
दिल्ली-1100092
सेवा में,
पुलिस आयुक्त
दिल्ली पुलिस
थाना लक्ष्मीनगर
दिल्ली-1100092

विषय—लाउडस्पीकरों के अनुचित प्रयोग को रोकने की प्रार्थना।

महोदय,

मैं आपके क्षेत्र का एक नागरिक हूँ और आपको अत्यन्त खेद के साथ सूचित करना चाहता हूँ कि हमारे क्षेत्र में नियम के विरुद्ध गलत समय पर लाउडस्पीकरों का प्रयोग किया जा रहा है। समय-सीमा के बाद भी लोग लाउडस्पीकरों का प्रयोग कर छात्रों, वृद्धों तथा बीमार लोगों को आघात पहुँचा रहे हैं और उनका साथ देते हैं पुलिस कर्मचारी।

आपसे अनुरोध है कि कृपया इस मामले की जाँच करें और इस गैरकानूनी कार्य को रोकें।

सधन्यवाद!

भवदीय
सुकान्त मेहता

अथवा

एक सैनिक की आत्मकथा

संकेत-बिन्दु—(i) सैनिक की दिनचर्या, (ii) संघर्ष, (iii) चुनौतियाँ।

मैं भारतीय सेना का एक सैनिक हूँ। मेरा नाम करतार सिंह है। मैं मथुरा जनपद के बलदेव कस्बे का रहने वाला हूँ तथा मधुबन (करनाल) के सैनिक स्कूल में पढ़ा हूँ। स्कूल के समय से ही मैंने सैनिक अनुशासन व कठोर दिनचर्या का पालन किया है। सुबह चार बजे जागकर परेड करना मेरे जीवन का अंग बन चुका है। देश की पर्वतीय सीमा पर हमें बड़ी विषम परिस्थितियों में जीवन बिताना पड़ता है। सर्दी में जब तापमान शून्य से भी नीचे चला जाता है तब भी हाड़ कँपा देने वाली ठण्ड में हम पूरी सजगता और निष्ठा से देश की सीमा की सुरक्षा में लगे रहते हैं। देश की अन्य सीमाओं पर भी हम अनेक असुविधाओं और कठिनाइयों को भोगते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं। देशवासी चैन की नींद सो सकें इसके लिए हम रातों में जागकर पहरा देते हैं। घुसपैठियों व आतंकवादियों से जूझते हुए हम हमेशा अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार से ड्यूटी के दौरान मैंने लेह के बर्फीले इलाकों का भी आनन्द लिया और जैसलमेर की तपती बालू का भी। हम सैनिकों की जिन्दगी में एक अजब दीवानापन होता है। प्रतिदिन कोई न कोई नई चुनौतियाँ हमारे सामने होती हैं। हमारी किसी साँस का कोई भरोसा नहीं होता। मौत हर दम हमारे सामने नाचती रहती है किन्तु हम दीवाने उससे खेलते रहते हैं। हम कहीं भी हों, मस्ती हमारा साथ नहीं छोड़ती।

●●

टेस्ट–2

अधिकतम अंक 10

खण्ड–'क' (अपठित बोध)

1. **(i)** कवि कर्मवीरों के दृढ़ संकल्प और कठोर परिश्रम करने जैसी सकारात्मक विशेषताओं की ओर संकेत कर रहा है।

(ii) कार्बन से हीरा बनाना व काँच को उज्ज्वल रत्न बनाना तभी संभव है कि जब तक काम पूरा न हो तब तक अपनी जगह से न टलें। तराशने का काम लगातार चलता रहे।

(iii) **(1) लोहे के चने चबाना—** बंजर खेत में फसल उगाने के लिए मोहन को लोहे के चने चबाने पड़े।

(2) जी में ठानना— इस वर्ष कक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने का उद्देश्य राम ने अपने जी में ठान लिया है।

खण्ड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. **(i)** अकाल पीड़ित—तत्पुरुष

(ii) मैंने बहुत कोशिश की।

(iii) भारत सरकार का नोटबंदी का आदेश पत्थर की लकीर था।

(iv) जैसे ही पिताजी आए वैसे ही वर्षा रुक गई।

खण्ड–'ग' (पाठ्य-पुस्तक)

3. **(i)** काठगोदाम में से एक कुत्ता तीन टाँगों के बल रेंगते हुए आया उसके पीछे दौड़ते हुए एक व्यक्ति द्वारा कुत्ते की पिछली टाँग पकड़े जाने पर कुत्ता किकियाने लगा। कुत्ते के किकियाने व व्यक्ति की चीख-पुकार से भीड़ इकट्ठी हो गई।

(ii) समुद्र के गुस्से का कारण मानव द्वारा महानगरीकरण के लिए समुद्र की जमीन को घेरकर इमारतों का निर्माण करना था। उसने लहरों में तैरते तीन समुद्री जहाजों को तीन अलग-अलग दिशाओं में फेंककर अपना गुस्सा व्यक्त/शांत किया।

(iii) सुभाष बाबू ने 26 जनवरी, 1931 को कोलकाता में भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए तिरंगे झंडे को फहाराया था। अंग्रेज सरकार के तीव्र विरोध के बावजूद यह उत्सव उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ था। लेखक ने इस दिन को इसीलिए अपूर्व कहा है।

4. कवि के अनुसार जो व्यक्ति स्वार्थपूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ, अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, ऐसे मनुष्य का जीना और मरना दोनों वृथा हैं। मनुष्य को चाहिए कि अपनी बौद्धिक शक्ति और संवेदनशीलता के बल पर सृजनात्मक तथा अविस्मरणीय कार्य करने में ही जीवन की सार्थकता समझे, किन्तु यदि मनुष्य के जीवन समाप्त होने के साथ ही लोग उसे भूल जाएँ, तो उसका जीवन और मरण दोनों वृथा हैं।

5. मनुष्यता कविता में कवि ने राजा रंतिदेव, दधीचि ऋषि, उशीनर, कर्ण तथा महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए मानवता, एकता, सहानुभूति, सद्भाव, उदारता और करुणा का संदेश देना चाहता है। वह मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद आदि संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहता है। वह मनुष्य में उदारता के भाव भरना चाहता है। कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दुखियों, वंचितों और जरूरत मंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो। वह कर्ण, दधीचि, रंतिदेव आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा ले। वह अपने मन में करुणा का भाव जगाए। वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे। एक-दूसरे का सहयोग करके देवत्व को प्राप्त करे। वह हँसता-खेलता जीवन जिए तथा आपसी मेल-जोल बढ़ाने का प्रयास करे। उसे किसी भी सूरत में अलगाव और भिन्नता को हवा नहीं देनी चाहिए।

अथवा

बिहारी की भक्ति-भावना प्रेम पर आधारित है। कवि कभी कृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध होता है कभी वह गोपियों को बरतस (बात का रस) देते हुए नायक का चित्रण करता है। कभी उनके कृष्ण राधिका को मन में बसाए दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है मानो संसार के कष्टों और अपने भक्तों से भगवान का कोई सरोकार नहीं है। बिहारी यह भी मानते हैं कि भगवान सच्चे हृदय वाले भक्त के हृदय में ही वास करते हैं, उन्हें बाह्य आडम्बरों की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

6. **सख्त पीटी मास्टर—**पीटी मास्टर बहुत कठोर था। वह छात्रों को अनुशासन में लाने के लिए बहुत कठोर और क्रूर दण्ड दिया करता था। छात्रों को घुड़की देना, ठुड्डे मारना, उन पर बाघ की तरह झपटना, उनकी खाल खींचना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल था। उसे यह सहन नहीं था कि कोई भी बच्चा कतार से बाहर हो या टेढ़ा खड़ा हो या अपनी पिण्डली खुजलाए। वह ऐसे बच्चों को समझाने की बजाय कठोर दण्ड दिया करता था।

अयोग्य अध्यापक—पीटी मास्टर जब फारसी पढ़ाने लगता था तो और भी क्रूर हो उठता था। वह बच्चों को समझाने की बजाय डंडे से काम कराना चाहता था। वह चाहता था कि बच्चे भय के मारे पाठ याद कर लें। जिस पाठ को कक्षा का एक भी बच्चा याद न कर पाया, वह पाठ जरूर या तो कठिन होगा या छात्र अधिक योग्य न होंगे। दोनों ही स्थितियों में मास्टर का पीटना बेतुका काम था। ऐसा व्यक्ति खच्चर तो हाँक सकता है, छात्रों को नहीं पढ़ा सकता।

स्वाभिमानी—पीटी मास्टर का सिद्धांत है कि लड़कों को डाँट-डपट कर रखा जाए। उसकी सोच गलत हो सकती है। परन्तु अपनी नजरों में वह ठीक है। इसलिए चौथी कक्षा के बच्चों को मुर्गा बनाकर कष्ट देना उसे अनुचित नहीं लगता। अत: जब हैड मास्टर उसे कठोर दण्ड देने पर मुअत्तल कर देते हैं तो वह गिड़गिड़ाने नहीं जाता।

खण्ड–'घ' (लेखन)

7.

सुलेख

बॉल और जैल पैन

सुन्दर लिखावट और अच्छे अंक चाहिए तो इस्तेमाल कीजिए

सुलेख पैन

वॉटर प्रूफ और मोतियों-सी लिखावट केवल **सुलेख पैन** से ही।

●●

मध्यावधि के पश्चात् (Post-Mid Term Tests)

अपठित, व्याकरण, पाठ्यपुस्तक (पद्य भाग, गद्य भाग एवं कृतिका)एवं लेखन खण्ड के प्रश्नों सहित

टेस्ट–1

अधिकतम अंक 10

खण्ड–`क' (अपठित बोध)

1. **(i)** लोकरंजन की व्यवस्था का ढाँचा भय, लोभ आदि व्यवस्थाओं पर आधारित है तथा इसका उपयोग धर्म-शासन, राज-शासन और मत-शासन करने में किया जाता है।

(ii) दंड का भय और अनुग्रह का लोभ राज-शासन व आचार्यों के द्वारा दिखाया गया है, जिससे उनके द्वारा किए गए अन्याय और अत्याचार का विरोध लोगों के द्वारा न किया जा सके।

(iii) सम्मान
लालच

(iv) शासक व्यवस्था व धर्म व्यवस्था अपने अन्याय और अत्याचार से उठने वाले विरोध को रोकने के लिए व शान्ति कायम रखने के लिए भय और लालच का सहारा लेती है।

खण्ड–`ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. **(i)** मेरा देश भारत है। देश वाक्य का हिस्सा है, इस कारण पद है।

(ii) चरण-कमल, कर्मधारय समास

(iii) मोर के पंख सुन्दर होते हैं।

(iv) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

खण्ड–`ग' (पाठ्य-पुस्तक)

3. वज़ीर अली एक जाँबाज सिपाही था। इस प्रकार जो अंग्रेजों की ब्रिटिश कम्पनी की सैनिक छावनी में प्रवेश कर कर्नल से कारतूस प्राप्त कर सकता है। वह साधारण व्यक्ति या सिपाही नहीं हो सकता। वज़ीर अली ने एक जाँबाज सिपाही की तरह प्राणों की बाजी लगाकर कारतूस हासिल किए। उसका यह कार्य उसे एक जाँबाज सिपाही सिद्ध करता है और हम वज़ीर अली को जाँबाज सिपाही कह सकते हैं।

4. **(i)** मैथिलीशरण गुप्त ने गर्व रहित जीवन बिताने के लिए तर्क देते हुए कहा है कि संसार में रहने वालों को यह समझ लेना चाहिए कि धन सपत्ति तुच्छ वस्तु है और हम सबके साथ सदैव ईश्वर है। हम अनाथ न होकर सनाथ हैं।

(ii) इस गीत को पढ़कर हमें देशहित, बलिदान और संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। जब देश पर कोई विदेशी आक्रमणकारी चढ़ आया हो, तब हमें जी जान लगाकर देश की रक्षा करनी चाहिए। युद्ध में चाहे कितने भी संकट आएँ, मौत सामने आ जाए, तो भी हमें बलिदान देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें एक के बाद एक बलिदानी काफिले तैयार करने हैं ताकि आखिरी दम तक हम देश की रक्षा में काम आ सकें।

5. कवि ईश्वर पर सदैव विश्वास बनाए रखना चाहता है। दु:ख के दिनों में भी परमेश्वर के प्रति उसकी आस्था पर किसी प्रकार का संदेह या संशय न हो, क्योंकि ईश्वर पर उनके विश्वास का संबल ही उसे हर कठिनाई को सहने की शक्ति प्रदान करता है। ईश्वर पर पूर्ण विश्वास ही उसे कठिनाइयों में निर्भय होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

अथवा

हमें आज़ादी प्राप्त करने के लिए अपने वीर सैनिकों को देश पर कुर्बान करना पड़ा। विदेशियों की चतुराई एवं चालाकी को न समझ पाने के कारण उनके धोखे को सहन करना पड़ा। अनेक बहनों ने अपने भाई तथा अनेक माताओं ने अपने लाल खोकर यह आज़ादी हासिल की, किन्तु इन सबसे हमने शत्रुओं की चतुराई एवं कपटता से सदैव सावधान रहने का पाठ पढ़ा।

6. जब टोपी ने खाने के दौरान, 'अम्मी' शब्द कहा तो खाना खाते हुए सबके हाथ यकायक वहीं थम गए। अन्य हिंदू परिवारों की तरह टोपी का परिवार भी उर्दू के संबोधनों से परहेज करता था। उन्हें ऐसा लगा जैसे खाने की मेज पर कोई ऐसा पदार्थ रख दिया गया हो जो शुद्ध शाकाहारियों के खाने योग्य न हो। उन्होंने अटकलें लगाईं और फिर टोपी से यह सच्चाई जान ही ली कि उसकी दोस्ती एक मुस्लिम लड़के से है। तब उसकी माँ ने पीट-पीटकर यह कुबूलने को कहा कि वह आगे से कभी उससे मिलने नहीं जाएगा, लेकिन टोपी किसी भी कीमत पर यह कुबूलने को तैयार नहीं हुआ।

खण्ड–'घ' (लेखन)

7.

बिकाऊ है

सिकन्दरा साइट–बी मथुरा रोड आगरा में करीब 2000 वर्गगज का प्लॉट, तुरन्त कब्जा,
वास्तविक ग्राहक ही सम्पर्क करें—सुबह 11 से सायं 7 बजे तक
मो.—9458731195, 9412722591

अथवा

आवश्यक सूचना

दिनांक .....

समस्त छात्र–छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विद्यालय–भवन की शिवाजी विंग में निर्माण कार्य होने के कारण वहाँ की सभी कक्षाएँ आज से रानी लक्ष्मीबाई विंग में लगेंगी। अत: आज से कोई भी विद्यार्थी शिवाजी विंग की ओर न जाये।

आज्ञा
दीपेन्द्र सिंह
(प्रधानाचार्य)

●●

टेस्ट–2

अधिकतम अंक 10

खण्ड–'क' (अपठित बोध)

1. (i) सूरमाओं की पहचान यह है कि वे विपत्ति आने पर विचलित नहीं होते, घबराते नहीं हैं और एक पल के लिए भी अपना धैर्य नहीं खोते।

(ii) आदमी की सामर्थ्य का इस रूप में वर्णन किया गया है कि संसार की कोई भी मुसीबत आदमी के सामने ठहर नहीं सकती। आदमी में वो सामर्थ्य है कि पर्वत को ढकेल सकता है और पत्थर को पानी बना सकता है।

(iii) **(1) गले लगाना**—महेश ने जानबूझकर यह मुसीबत अपने गले लगा ली है।

(2) पाँव उखड़ना—विराट कोहली के सामने न्यूजीलैण्ड की क्रिकेट टीम के पाँव उखड़ गये।

खण्ड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

2. (i) विशेषण पद—चरित्रवान, अच्छे।

(ii) माँ के पीटने पर बालक रूठ गया।

(iii) स्वर्ग को प्राप्त

(iv) चोरों ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दी।

खण्ड–'ग' (पाठ्य–पुस्तक)

3. (i) "प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट" उन लोगों को कहते हैं जो अपने आदर्शों को व्यावहारिक बनाकर जीवन में अपनाते हैं जो आदर्शों को व्यवहार के योग्य बनाते हैं।

(ii) जब सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाया गया, उससे अंग्रेजों को काफी आर्थिक लाभ भी हुआ और उनका प्रभाव भी बढ़ गया। वह अंग्रेजों का मित्र था और सआदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का यही मकसद था।

4. मनुष्यता कविता के अनुसार अनर्थ एक भाई का दूसरे भाई के कष्टों का हरण न करना है।

अथवा

आत्मत्राण कविता के द्वारा कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने हमें विपत्तियों से न घबराने का संदेश दिया है। भले ही कोई सहायक न मिले पर हम साहस बनाए रखें। यदि कोई हमें धोखा दे या छल–कपट करे तो भी मन में हमें हार नहीं माननी चाहिए। सुख के दिनों में भी सदैव ईश्वर को याद रखें और कभी ईश्वर के प्रति मन में अविश्वास और संदेह की भावना न लाएँ—यही संदेश इस कविता से हमें प्राप्त होता है।

5. इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला भिन्न-भिन्न धर्मों के व्यक्ति थे, फिर भी उनमें गहरी दोस्ती हुई। टोपी शुक्ला, जो हिन्दू था, का मुसलमान इफ़्फ़न की दादी से लगाव था। उन दोनों के परिवारों का परिवेश अलग-अलग था फिर भी दोनों की दोस्ती कायम रही।
घरवालों से टोपी शुक्ला को डाँट-फटकार मिली परन्तु घर की नौकरानी सीता से उसे सहानुभूति मिली। इससे पता चलता है कि प्रेम किसी बात का पाबंद नहीं होता। जाति और धर्म उसमें बाधा उत्पन्न नहीं कर सकते—यही लेखक मानता है।

खण्ड-'घ' (लेखन)

6.

प्रदूषण—एक सतत चुनौती

संकेत-बिंदु—(i) प्रदूषण की बढ़ती समस्या, (ii) कारण, (iii) निवारण।

समस्त जीवधारियों का जीवन पर्यावरण पर निर्भर है। जीव का जीवन, उसकी शक्ति एवं उसका विकास पर्यावरण की गोद में ही विकसित होता है। प्रकृति और पर्यावरण हमें विरासत में मिला है।

मूल रूप में बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण की मुख्य समस्या है। पर्यावरण प्रदूषण आज विभिन्न रूपों में सामने आ रहा है। जिनमें प्रमुख हैं—भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। भूमि प्रदूषण के मुख्य कारण बाँध और हमारे अत्यधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग है। बाँधों के कारण भूमि का अपक्षय होता है। कल कारखाने, मोटर-स्कूटर, रेलें, बसें दिन-रात धुएँ के बादलों के रूप में वायुप्रदूषण करते हैं। कार्बन डाइ-ऑक्साइड, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन, कार्बन मोनो ऑक्साइड का प्रभाव मनुष्य ही नहीं वरन पशु-पक्षियों पर भी पड़ रहा है। पराबैंगनी किरणें कैंसर जैसे भंयकर रोगों को जन्म दे रही हैं। शुद्ध वायु अशुद्ध होती जा रही है।

औद्योगीकरण ने जल-प्रदूषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चीनी, कपड़ा, जूट, रसायन, आदि उद्योगों का सारा कचरा नदियों और जलाशयों के जल को निरन्तर प्रदूषित कर रहा है। प्रदूषित जल पीने के कारण बीमारियों में बढ़ोत्तरी हो रही है। ध्वनि प्रदूषण ने हमारे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। औद्योगीकरण एवं मशीनीकरण ध्वनि प्रदूषण के मुख्य कारण हैं। धार्मिक संस्कार, त्योहार एवं लाउडस्पीकर आदि भी ध्वनि प्रदूषण के विस्तार में सहायक हैं। 40 से 45 डेसीबल तक की सामान्य ध्वनि सीमा 110 डेसीबल तक पहुँच गई है।

भूमि प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अनावश्यक बाँधों के निर्माण, वनों की कटाई तथा रासायनिक उर्वरकों के अतिशय प्रयोगों पर रोक लगानी चाहिए। जल प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है कि उद्योगों में प्रयुक्त दूषित जल को सीधे नदियों, जलाशयों में न छोड़ा जाए। वायु प्रदूषण को रोकने के लिए आवश्यक है कि उद्योगों की चिमनियों पर ऐसे फिल्टर लगाए जाएँ जो धुएँ आदि प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमण्डल में न मिलने दें। पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण—बढ़ती हुई जनसंख्या पर शीघ्र अंकुश लगाया जाए।

यदि समय रहते हम पर्यावरण संरक्षण के लिए सजग नहीं हुए तो निश्चित ही मानव का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।

●●